ये अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारियों पर भी उपकार करो

31-07-2024

हर आत्मा के प्रति रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में निःस्वार्थ पन हो, तब कहेंगे पर उपकार की भावना। जैसे ब्रह्मा बाप ने स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा "पहले बच्चे" -इसको कहते हैं पर-उपकारी। यही सम्पन्नता के सम्पूर्णता की निशानी है, इसमें फालो फादर कर समान बनो।

Be full with the feeling of uplifting others and have mercy on those who defame you.

Have feelings of mercy, feelings of co-operation and feeling of giving courage for every soul. In every situation, in every task, and in every co-operative gathering, let there be altruism. Then it would be said that you have the feeling of uplifting others. Father Brahma did not accept anything for himself. He didn't accept any praise nor any physical thing, nor the place he lived in. Subtly and physically, it was always "Children first". This is called uplifting others. This is a sign of perfection of completion. Follow the Father in this and become equal.